प्रेस विज्ञप्ति

आईआईटी भुवनेश्वर में 'कोणार्क मंथन' संगोष्ठी ने सूर्य मंदिर के भवन सामग्री और वास्तुशिल्प चमत्कार का खुलासा किया

भुवनेश्वर, 22 मार्च 2024: भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान (आईआईटी) भुवनेश्वर ने हाल ही में 'कोणार्क मंथन' नामक एक दिवसीय संगोष्ठी का आयोजन किया, जो भवन निर्माण सामग्री और सूर्य मंदिर के वास्तुशिल्प चमत्कार के पीछे रहस्यों को उजागर करने के लिए समर्पित था। आईआईटी भुवनेश्वर के स्कूल ऑफ मिनरल्स, मेटलर्जिकल एंड मैटेरियल्स इंजीनियरिंग द्वारा होस्ट किया गया, संगोष्ठी ने इस पेचीदा विषय पर चर्चा की, जो प्राचीन भारत के सबसे उत्कृष्ट इंजीनियरिंग कार्यों में से एक की खोज कर रहा था। प्रो. किशोर कुमार बासा, राष्ट्रीय स्मारक प्राधिकरण (एनएमए), संस्कृति मंत्रालय, सरकार के अध्यक्ष भारत की; डॉ. एन.सी. पाल, ओएसडी-सह-इंजीनियर-इन-चीफ (सिविल), पीडब्ल्यूडी, सरकार। उद्घाटन सत्र में ओडिशा के; और आईआईटी भुवनेश्वर के निदेशक प्रो. श्रीपद करमालकर ने भाग लिया।

संगोष्ठी के संयोजक डॉ. सुभानकर पाटी ने कार्यक्रम के लिए स्वर निर्धारित करते हुए स्वागत भाषण दिया। प्रो. कर्मलकर ने न केवल स्थापत्य चमत्कारों को प्रदर्शित करने बल्कि हमारे पूर्वजों की सरलता का जश्न मनाने में संगोष्ठी के महत्व पर प्रकाश डाला। उन्होंने क्षेत्र की समृद्ध तकनीकी विरासत को प्रदर्शित करते हुए सन मंदिर के निर्माण में पत्थर और लोहे की बीम जैसी स्थानीय रूप से उपलब्ध सामग्रियों के अभिनव उपयोग पर जोर दिया।

प्रो. बासा ने प्राचीन निर्माणों को समझने में सामूहिक स्मृति के महत्व पर जोर देते हुए स्मारकों के ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में चर्चा की।

डॉ. एन.सी. पाल ने प्राचीन ओडिशा में प्रचलित कलिंग वास्तुकला और संरचनात्मक डिजाइन अवधारणाओं पर चर्चा की, जिसमें मंदिर निर्माण में संक्षारण-प्रतिरोधी सामग्रियों के उपयोग पर जोर दिया गया। प्रो. ओ.एन. मोहंती, ऑनलाइन मोड

के माध्यम से, भारतीय धातुकर्म विज्ञान और प्राचीन काल में धातुओं के उपयोग पर ध्यान केंद्रित किया, विशेष रूप से स्मारकों में लोहे के बीम के संक्षारण-प्रतिरोधी गुणों पर चर्चा की।

डॉ. दिबिशदा बी. गर्नायक, डॉ. संगीता मिश्र, डॉ. सुनील कुमार पटनायक और डॉ. शिव शंकर पांडा जैसे विशेषज्ञों के नेतृत्व में तकनीकी सत्र में लोहे के निर्माण से लेकर सूर्य पूजा के इतिहास तक के विषयों को शामिल किया गया। उपस्थित लोगों ने धातुकर्म प्रथाओं, उत्पादित लोहे की गुणवत्ता, और सूर्य मंदिर के वास्तुशिल्प महत्व में अंतर्दृष्टि प्राप्त की। प्राचीन मंदिरों में उपयोग की जाने वाली ईंटों के प्रकारों और बौद्ध स्थलों में लोहे के उपयोग पर चर्चा ने विद्वानों के प्रवचन को और समृद्ध किया।

डॉ. नरेश चंद्र साहू ने सभी शामिल लोगों के योगदान को स्वीकार करते हुए धन्यवाद ज्ञापन का प्रस्ताव किया। संगोष्ठी के सह-संयोजक डॉ. पार्थसारथी डे भी कार्यक्रम के संगठन में शामिल थे।

इसके अतिरिक्त, आईआईटी भुवनेश्वर “फोर्जिंग द पास्ट: इन्वेस्टिगेटिंग ऑफ आयरन बीम्स यूज इन कोणार्क सन टेम्पल और एनलेजिंग द सोशियो-इकोनॉमिक इम्पैक्ट ऑन लोकल कम्युनिटी नामक एक अनुसंधान परियोजना का संचालन कर रहा है। शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार के तहत भारतीय ज्ञान प्रणाली (आईकेएस) द्वारा चयनित, इस परियोजना ने 2022-23 के लिए भारतीय ज्ञान संवर्धन योजना के प्रतिस्पर्धी अनुदान कार्यक्रम के तहत धन प्राप्त किया है। इसका उद्देश्य कोणार्का सन मंदिर में लोहे की किरणों के निर्माण के तरीकों को उजागर करना है, जो भारत के समृद्ध लेकिन भूले हुए तकनीकी कौशल और स्थानीय समुदाय पर इसके सामाजिक-आर्थिक प्रभावों पर प्रकाश डालते हैं।